Govt.DigvijayAutonomous P.G. College
Rajnandgaon (C.G.)

Department of Geography

Annual Report

Session 2022-2023

Department of Geography
Annual Report
Session 2022-2023

1. **Teaching and Supporting Staff**

S.No.	Name	Designation	Qualification
01.	Dr. Krishna Nandan Prasad	Asst. Professor	M.A., M.Phil., Ph. D (JNU)
02.	Dr. Suvendra Jenamani	Asst. Professor	M.A., M.Phil., Ph. D (DU)
03.	Dr. Pratima Vishwakarma	Guest Lecturer	M.A., M.Phil., Ph. D (RSU)
04.	Dr. Ashis Kumar Majhi	Guest Lecturer	M.A., M.Phil., Ph. D (RSU)
05.	Shri Mahit Tandan	Lab Technician	M.A.
06.	Shri Rahul Dewangan	Lab Attendant	M.A.

2. **Enrollment**

Programme		Boys	Girls	Total
BA I sem.	Core Course -CC	47	65	112
	Elective Course - EC	20	19	39
BA II		78	66	144
BA III		36	58	94
UG Total		181	208	389
MA I sem		11	14	25
MA III sem		08	12	20
PG Total		19	26	45
Grand Total UG+PG		200	234	434

3. Board of Study

भूगोल अध्ययन मण्डल 2022-23

DATE : 20/07/2022
DAY - Wednesday

आज दिनांक 20.07.2022 को 11.00 बजे (दोपहर) भूगोल विभाग में भूगोल अध्ययन मण्डल की बैठक आयोजित की गयी। इस बैठक के लिये विश्वविद्यालय एवं महावि. द्वारा नामित सदस्य जो निम्नानुसार है, उपस्थित हुये।

(क) विश्वविद्यालय द्वारा नामित सदस्य
डॉ. सुषमा यादव
शा. डब्ल्यू. डब्ल्यू पाटणकर महावि. दुर्ग

(ख) महाविद्यालय द्वारा नामित सदस्य
(1) डॉ. एस. के. दास
शा. महावि. वैशालीनगर भिलाई
(2) प्रो. के. के. द्विवेदी
शा. कमला देवी महिला महावि. राजनांदगाँव

(ग) महाविद्यालय द्वारा नामित उद्योगपति एवं भूतपूर्व छात्र
1. श्री बसंत वहेकर
2. कुमारी लामेश्वरी साहू

(घ) 1. डॉ. के. एन. प्रसाद विभागाध्यक्ष भूगोल
2. डॉ. ए. के. मिश्रा सहा. प्रा. भूगोल
3. डॉ. एस. जैनामणी सहा. प्रा. भूगोल

(ङ) बी.ए. II एवं III का पाठ्यक्रम पूर्ववत रहेगा।

1. डॉ. सुषमा यादव 20/07/22
2. डॉ. एस. के. दास
3. प्रो. के. के. द्विवेदी
4. डॉ. के. एन. प्रसाद 20-7-2022
5. डॉ. एस. जैनामणी 20/7/22
6. डॉ. ए. के. मिश्रा 20.7.22
7. श्री बसंत वहेकर
8. कुमारी लामेश्वरी साहू

Principal
Govt. Digvijay College
Rajnandgaon (C.G.)

Head of Geography Deptt.
Govt. Digvijay College
Rajnandgaon (C.G.)

27

(1) सत्र 2022-23 में एम.ए. III Semester भूगोल में प्रश्नपत्र XIII A में Remote Sensing Technique नया प्रश्न पत्र प्रारंभ किया जा रहा है जबकि XIII B में पूर्व की भांति जैव भूगोल प्रश्न पत्र पाठ्यक्रम में सम्मिलित है। छात्र उक्त दोनों में से एक प्रश्नपत्र का चयन कर सकेगा।

(2) एम.ए. I सेमेस्टर में Value Added Course के अन्तर्गत Map Reading & Filling पाठ्यक्रम रखा जा रहा है।

(3) राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार स्नातक (बी.ए.) I सेमेस्टर में पाठ्यक्रम में परिवर्तन किया जा रहा है। इसमें Core Course 1 के अन्तर्गत भूआकृति विज्ञान का प्रश्नपत्र रखा जा रहा है जो 04 क्रेडिट एवं 04 क्रेडिट का होगा। इसके अध्यापन हेतु 60 घण्टे का समय निर्धारित किया गया। इसमें आन्तरिक मूल्यांकन 20 अंक का होगा तथा End Term Exam 80 अंक का होगा। इसी सेमेस्टर में प्रायोगिक अन्तर्गत 02 क्रेडिट का पाठ्यक्रम निर्धारित किया गया जिसके अध्यापन हेतु 30 घण्टे का समय आवंटित होगा।

(4) बी.ए. IInd सेमेस्टर में Human Geography and Cultural Land-Scape प्रश्न पत्र Core Course 2 के अन्तर्गत रखा गया। यह भी 04 क्रेडिट का होगा और इसके अध्यापन हेतु 60 घण्टे आवंटित है। इसमें भी 20 अंक का आन्तरिक मूल्यांकन का होगा और 80 अंक का End Term Examination होगा। इसके पाठ्यक्रम में कुल 04 क्रेडिट होगी। इस सेमेस्टर में प्रायोगिक के अन्तर्गत सांख्यिकीय विधि को सम्मिलित किया गया जो 02 क्रेडिट होगा जिसके अध्यापन हेतु 30 घण्टे का समय आवंटित है। इसकी परीक्षा भी दो तरह से होगी प्रथम 20% आन्तरिक मूल्यांकन के अन्तर्गत तथा 80% End Term Examination के अन्तर्गत ली जायेगी।

Change in the Syllabus

1. सत्र 2022–2023 में एम.ए. भूगोल III सेमेस्टर में प्रश्न पत्र XIII – A Remote Searing and GIS के रुप में जोड़ा गया है। XIII – B Bio-Georaphy है। विद्यार्थी दोनो में से एक प्रश्न पत्र का चयन करेगा।
2. एम. ए. भूगोल I सेमेस्टर में एक नया कोर्स Value added Course Map Reading & Filling प्रारम्भ किया गया है।
3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत बी.ए. भूगोल I सेमेस्टर में सेमेस्टर पद्धति लागू करने के उपरान्त नया (भू–आकृति विज्ञान – 4 क्रेडिट एवं प्रायोगिक – 2 क्रेडिट) एवं Electine Course (2 क्रेडिट) का रखा गया है। बी.ए. भूगोल II सेमेस्टर में मानव भूगोल एवं भू–दृष्यावली – 4 क्रेडिट का एवं प्रायोगिक – 2 क्रेडिट का रखा गया है।

4 भूगोल परिषद का गठन

भूगोल विभाग में स्नातकोत्तर परिषद् का गठन एवं मूल्यवर्धित कोर्स का उद्घाटन

राजनांदगांव (दावा)। शा. दिग्विजय महाविद्यालय के भूगोल विभाग में सत्र 2022-23 के लिए 23 सितंबर को प्राचार्य डॉ. केएल टांडेकर, विभागाध्यक्ष डॉ. के.एन. प्रसाद के साथ डॉ. अनिल मिश्रा, डॉ. एस. जेनामणि, डॉ. प्रतिमा विश्वकर्मा एवं तकनीशियन मोहित टंडन की उपस्थिति में दो कार्यक्रम आयोजित किये गये। पहला कार्यक्रम भूगोल स्नातकोत्तर परिषद् का गठन था।

परिषद् के अध्यक्ष हेतु एमए तृतीय सेमेस्टर से कु. जागृति निर्मलकर, सचिव गजेंद्र पाल, कोषाध्यक्ष कु. नवीता तथा एमए प्रथम सेमेस्टर से उपाध्यक्ष तेमेश्वर व सहसचिव कु. डॉली को पिछले वर्ष की परीक्षा में प्राप्तांक पर आधारित मेरिट के आधार पर मनोनयन सभी छात्र-छात्राओं की उपस्थित में किया गया। प्राचार्य ने सभी पदाधिकारियों को बधाई देते हुए उनसे गैर-शैक्षणिक गतिविधियों के अधिक-से-अधिक आयोजन के लिए प्रेरित किया। साथ ही छात्र-छात्राओं के प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु प्रोत्साहित किया।

दूसरा कार्यक्रम मूल्यवर्धित कोर्स मानचित्र पठन एवं नक्शा भरना था। इस पाठ्यक्रम के महत्व पर प्रकाश डालते हुए डॉ. प्रसाद ने कहा कि भूगोल एक स्थानिक विज्ञान है। भू-तल पर कौन स्थान कहा है, उसकी प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक दृश्यावली कैसी एवं क्यों है। स्थानिक संबंध से प्रादेशिक विकास की दर व दिशा कैसे प्रभावित होती है, जैसे प्रश्नों के उत्तर के लिए मानचित्रण कला का विकास कर सही-सही उपयोगी मानचित्र अलग-अलग मापनी पर बनाये गये है। इसलिए मानचित्र को भौगोलिक अध्ययन का यंत्र कहा गया है। इस यंत्र की धार को तेज करने हेतु मानचित्र पठन एवं नक्शा भरने का कोर्स बहुत ही कारगर सिद्ध होगा। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अनिल मिश्रा ने किया और धन्यवाद ज्ञापन का दायित्व डॉ. एस जेनामणि ने निभाया।

5. फैकल्टी द्वारा दिए गए अतिथि व्याख्यान

क्र.	फैकल्टी का नाम	दिनांक	विषय	महावद्यालय का नाम
1	डॉ के एन प्रसाद	2/12/2022	Origin of Indian Monsoon	स्व लाल श्याम शाह शास नवीन महाविद्यालय मोहला जिला-एम एम सी
		12-12- 2022	El Nino and Indian Monsoon	शास कमला देवी राठी कन्या महाविद्यालय राजनांदगाँव
		12/2/2023	Statistical Methods in Geography	शास कमला देवी राठी कन्या महाविद्यालय राजनांदगाँव

कार्यालय प्राचार्य,स्व. लाल श्याम शाह शासकीय नवीन महाविद्यालय
मोहला, जिला–मोहला–मानपुर–अं.चौकी (छ.ग.)

E-mail principal_gncmohla@rediffmail.com
www.naveencollege.com
फोन नं. 07747–299104
(College Code – 1915)

दिनांक. 02/12/2022

//प्रमाण पत्र//

डॉ. के.एन.प्रसाद सहायक प्राध्यापक भूगोल शास. दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगांव ने आज दिनांक–02/12/2022 "भारतीय मानसून की उत्पत्ति" पर बी.ए. भूगोल के विद्यार्थी के लिए समय 12:00 बजे से 1:00 तक अतिथि व्याख्यान दिया। उनके सारगर्भित व्याख्यान से छात्र–छात्राऐं लाभान्वित हुए। महाविद्यालय उनके इस कार्य की सराहना करता है।

G K Joshi
प्रभारी प्राचार्य
स्व. लाल श्याम शाह शास. नवीन महाविद्यालय
मोहला जिला-मोहला-मानपुर-अं.चौकी (छ.ग.)

शासकीय कमला देवी राठी महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजनांदगांव (छ.ग.)

भूगोल विभाग

प्रमाण – पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि, डॉ. / प्रो. के. एन. प्रसाद सह. प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (भूगोल)
महाविद्यालय शास. दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव (छ.ग.) ने दिनांक 12/12/2022
को विभाग द्वारा आयोजित विशेष अतिथि व्याख्यान माला में विषय विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित होकर,
विषय एलनीनो एवं लानीना पर सारगर्भित व्याख्यान दिया। विषयक अतिशय ज्ञानवर्धक व्याख्यान से छात्राएं लाभान्वित हुई।

सम्मान सहित

विभागाध्यक्ष

प्राचार्य
शास. कमलादेवी राठी महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजनांदगांव (छ.ग.)

शासकीय कमला देवी राठी महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजनांदगांव (छ.ग.)

भूगोल विभाग

प्रमाण – पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि, डॉ. / प्रो. के. एन. प्रसाद, सह. प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (भूगोल)
महाविद्यालय शास. दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगांव (छ.ग.) ने दिनांक 22/02/2023
को विभाग द्वारा आयोजित विशेष अतिथि व्याख्यान माला में विषय विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित होकर,
विषय भूगोल में सांख्यिकीय विधियां पर सारगर्भित व्याख्यान दिया। विषयक अतिशय ज्ञानवर्धक व्याख्यान से छात्राएं लाभान्वित हुई।

सम्मान सहित

विभागाध्यक्ष

प्राचार्य
शास. कमलादेवी राठी महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजनांदगांव (छ.ग.)

6. **Guest Lecture by Subject Experts under MoU Activities**

Date	Name	Designation	Institution	Topic
24/11/2022	Dr. Kuber Singh Gurupanch	Prof and Dean	Bharati Viswavidyalaya, Durg	Fredrick Ratzel
25/11/2022	Dr. Nivedita A. Lall	Asst. Prof.	Govt. K.D. Rathi Girls College, Rajnandgaon	Earth Summit
10/01/2023	Dr. Nivedita A. Lall	Asst. Prof.	Govt. K.D. Rathi Girls College, Rajnandgaon	World Cultural Realms
11/02/2023	Dr. Kuber Singh Gurupanch	Prof and Dean	Bharati Viswavidyalaya, Durg	Career in Geography
23/02/2023	Dr. K.K. Dwivedi	Asst. Prof.	Govt. K.D. Rathi Girls College, Rajnandgaon	Laws of the Ocean
23/02/2023	Dr. Jai Singh Sahu	Asst. Prof.	Govt. K.D. Rathi Girls College, Rajnandgaon	Theodolite and Dumphy Level

कार्यालय-प्राचार्य, शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
राजनांदगांव (छ.ग.)
Web site- www.digvijaycollege.com Email: principal@digvijaycollege.com ☎ : & Fax 07744-296331

क्र./1481/GDCR/2022 राजनांदगांव, दिनांक: /4/11/11/2022

प्रति,

डॉ. कुबेर सिंह गुरूपंच
प्राध्यापक
भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

विषय :— अतिथि व्याख्यान हेतु आमंत्रण पत्र।

——00——

उपरोक्त विषयांतर्गत लेख है कि महाविद्यालय में भूगोल विभाग द्वारा दिनांक 24.11.2022 समय 02:00 बजे से 03:00 बजे को शीर्षक **Germyan School F. Ratzel's Contribution in Geography** पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया जा रहा है। उक्त आयोजन में आप विषय विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित है।

कृपया निर्धारित तिथि को विषय विशेषज्ञ के रूप में व्याख्यान हेतु महाविद्यालय में उपस्थित होने की सहमति प्रदान करने का कष्ट करेंगे।

डॉ.के.एन.प्रसाद
विभागाध्यक्ष भूगोल
Head Geography Deptt.
शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय
Govt. Digvijay College
राजनांदगांव (छ.ग.)
Rajnandgaon (C.G.)

(डॉ. के.एल.टांडेकर)
प्राचार्य
Principal
शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय
Govt. Digvijay College
राजनांदगांव (छ.ग.)
Rajnandgaon (C.G.)

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजनाँदगाँव (छ.ग.)

—: उपस्थिति प्रमाण पत्र :—

दिनाँक – 24/11/20

प्रमाणित किया जाता है कि इस महाविद्यालय में भूगोल विभाग द्वारा आयोजित अतिथि व्याख्यान में डॉ. कुबेर सिंह गुरुपंच पदनाम प्राध्यापक संस्था का भारती विश्वविद्यालय दुर्ग (छ.ग.) ने आज दिनाँक 24/11/2022 को उपस्थित हो " फेड्रिक रैटजेल का भूगोल में योगदान " विषय पर व्याख्यान दिया। इस सारग व्याख्यान से छात्र–छात्राएँ लाभान्वित हुए।

विभागाध्यक्ष
Head Of Geography Deptt.
Govt. Digvijay College
Rajnandgaon (C.G.)

(डॉ. के. एल. टाण्डेकर)
Principal
Govt. Digvijay College
Rajnandgaon (C.G.)

कार्यालय-प्राचार्य, शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
राजनांदगांव (छ.ग.)

Web site: www.digvijaycollege.com Email: principal@digvijaycollege.com ☎ & Fax 07744-296331

क्र./1481/GDCR/2022

राजनांदगांव, दिनांक 21/11/2022

प्रति,

डॉ. निवेदिता ए. लाल
सहायक प्राध्यापक
शा.कमलादेवी राठी महिला महाविद्यालय
राजनांदगांव (छ.ग.)

विषय :– अतिथि व्याख्यान हेतु आमंत्रण पत्र।

––00––

उपरोक्त विषयांतर्गत लेख है कि महाविद्यालय में भूगोल विभाग द्वारा दिनांक 25.11.2022 समय 02:00 बजे से 03:00 बजे को शीर्षक The Earth Summit पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया जा रहा है। उक्त आयोजन में आप विषय विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित है।

कृपया निर्धारित तिथि को विषय विशेषज्ञ के रूप में व्याख्यान हेतु महाविद्यालय में उपस्थित होने की सहमति प्रदान करने का कष्ट करेंगे।

डॉ.के.एन.प्रसाद
विभागाध्यक्ष भूगोल
शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय
राजनांदगांव (छ.ग.)
Head of Geography Deptt.
Govt. Digvijay College
Rajnandgaon (C.G.)

(डॉ. के.एल.टांडेकर)
प्राचार्य
शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय
राजनांदगांव (छ.ग.)
Principal
Govt. Digvijay College
Rajnandgaon (C.G.)

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजनॉदगॉव (छ.ग.)

–: उपस्थिति प्रमाण पत्र :–

दिनॉक – 25/11/2022

प्रमाणित किया जाता है कि इस महाविद्यालय में भूगोल विभाग द्वारा आयोजित अतिथि व्याख्यान में डॉ. निवेदिता ए. लाल पदनाम सहायक प्राध्यापक संस्था का नाम शासकीय कमला देवी राठी महिला महाविद्यालय राजनांदगॉव (छ.ग.) ने आज दिनॉक 25/11/2022 को उपस्थित होकर " The Earth Summit " विषय पर व्याख्यान दिया। इस सारगर्भित व्याख्यान से छात्र–छात्राऍ लाभान्वित हुए।

25.11.2022
विभागाध्यक्ष
भूगोल
शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय
राजनांदगॉव (छ.ग.)
Head Of Geography Deptt.
Govt. Digvijay College
Rajnandgaon (C.G.)

(डॉ. के. एल. टाण्डेकर)
प्राचार्य
शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय
राजनांदगॉव (छ.ग.)
Principal
Govt. Digvijay College
Rajnandgaon (C.G.)

अतिथि व्याख्यान

फेड्रिक रेटजेल का भूगोल में योगदान

शा. दिग्विजय स्वसाशी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजनांदगांव के भूगोल विभाग में दिनांक 24.11.2022 को डॉ कुबेर सिंह गुरुपंच, प्राध्याक, भारती विश्वविद्लाय दुर्ग के द्वारा 'फेड्रिक रेटजेल का भूगोल में योगदान' विषय पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसमे विभागध्यक्ष डॉ. के एन. प्रसाद, डॉ. एस. जेनामणी, डॉ. प्रतिमा विश्वकर्मा एवं एम. ए. प्रथम एवं तृतीय सेमेस्टर के समस्त विद्यार्थी उपस्थित रहे। फ्रेडरिक रेटजेल ने भूगोल के अध्ययन में मानव के स्थान को स्थायी प्रकार से सुरक्षित रखने का कार्य किया था, जिस कारण रेटजेल को 'मानव भूगोल का जन्मदाता' भी कहा जाता है। व्याख्यान में रेटजेल की यात्राओं के साथ ही रेटजेल की रचनाओं पर भी प्रकाश डाला गया रेटजेल की रचनाओं में में एन्थ्रोपोज्योग्राफी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने १८६९ में सर्वप्रथम डार्विन के विकासवादी ग्रन्थ की समालोचना प्रस्तुत की। तब से जीवन-प्रयन्त उन्होंने जीव-विज्ञान, भू-विज्ञान, भौतिक, मानव एवं राजनीतिक भूगोल पर लेख एवं ग्रन्थ लिखें। १८७४-७५ में उन्होंने पूर्वी युरोप, इटली, उत्तरी अमरीका और मध्य अमरीका की यात्रा की। व्याख्यान में भौगोलिक विचारधारा के इतिहास के महान भूगोलवेत्ता फेड्रिक रेटजेल के भूगोल में योगदान पर विस्तृत चर्चा जिससे विद्यार्थी लाभान्वित हुए।

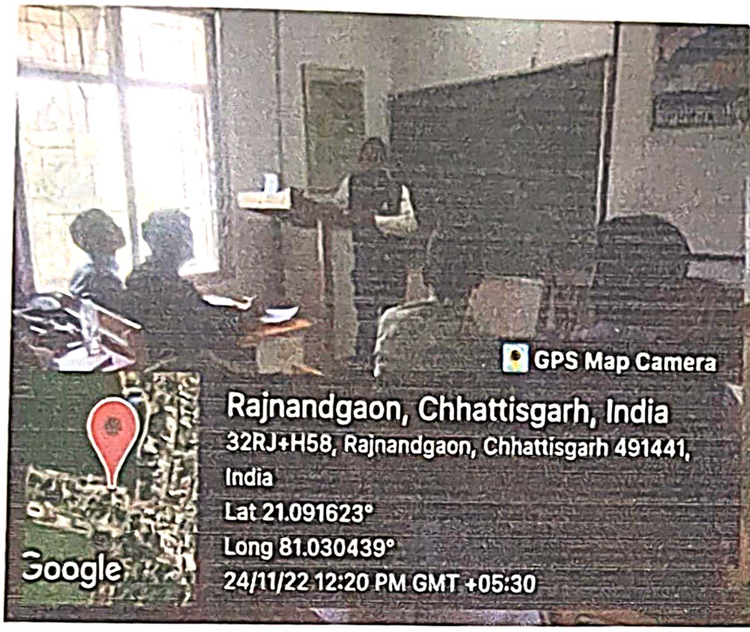

अतिथि व्याख्यान

पृथ्वी सम्मलेन

शा. दिग्विजय स्वसाशी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजनांदगांव के भूगोल विभाग में दिनांक 25.11.2022 को डॉ. निवेदिता लाल, सहायक प्राध्याक, शा. कमला देवी राठी महिला महाविद्यालय राजनांदगांव के द्वारा 'पृथ्वी सम्मलेन' विषय पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसमे भूगोल विभाग के विभागध्यक्ष डॉ. के एन. प्रसाद, डॉ. एस. जेनामणी, डॉ. प्रतिमा विश्वकर्मा एवं एम. ए. प्रथम एवं तृतीय सेमेस्टर के समस्त विद्यार्थीयो की उपस्थिति गरिमामय रही। व्याख्यान में पृथ्वी शिखर सम्मेलन के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई पृथ्वी सम्मेलन का आयोजन स्टॉकहोम सम्मेलन की 20वीं वर्षगाँठ मनाने के लिये 1992 में ब्राज़ील के शहर 'रियो-डि-जेनेरियो' में किया गया था। इसलिये इसे 'रियो सम्मेलन' भी कहते हैं। हालाँकि इसका आधिकारिक नाम 'पर्यावरण एवं विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन' (UNCED) है। इस सम्मेलन में मुख्य रूप से जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता और सतत् विकास (Sustainable Development) संबंधी मुद्दों पर विस्तृत चर्चा हुई और कई नए दस्तावेजों (Documents) को जारी किया गया और कुछ नए संगठन अस्तित्व में आए। व्याख्यान माला में वर्तमान की पर्यावरणीय समस्यओं पर विस्तृत चर्चा हुई। जिससे विद्यार्थी को पर्यावरण की स्वछता के महत्व एवं पर्यावरणीय समस्यओं के निदान में अपनी भूमिका की जानिकारी हुई जिससे विद्यार्थी बहुत लाभान्वित हुए।

अतिथि व्याख्यान

विश्व के सांस्कृतिक प्रदेश

शा. दिग्विजय स्वसाशी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजनांदगांव के भूगोल विभाग में दिनांक 10.01.2023 को डॉ. नियेदिता लाल, सहायक प्राध्याक, शा. कमला देवी राठी महिला महाविद्यालय राजनांदगांव के द्वारा एम. ए. द्वितीय सेमेस्टर के पेपर सामाजिक भूगोल विषय के 'विश्व के सांस्कृतिक प्रदेश' विषय पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसमे भूगोल विभाग के विभागध्यक्ष डॉ. के एन. प्रसाद, डॉ. एस. जेनामणी, डॉ. प्रतिमा विश्वकर्मा, श्री आशीष मांझी एवं एम. ए. द्वितीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर के विद्यार्थीयो की उपस्थिति गरिमामय रही। व्यख्यान में विश्व की संस्कृति पर भूगोल के प्रभाव एवं विश्व के चार प्रमुख सांस्कृतिक प्रदेशो पर प्रकाश डाला गया है पाश्चात्य सांस्कृतिक सांस्कृतिक प्रदेश, इस्लामी सांस्कृतिक सांस्कृतिक प्रदेश, भारतीय सांस्कृतिक सांस्कृतिक प्रदेश, पूर्वी एशियाई सांस्कृतिक प्रदेश जानिकारी हुई जिससे विद्यार्थी बहुत लाभान्वित हुए।

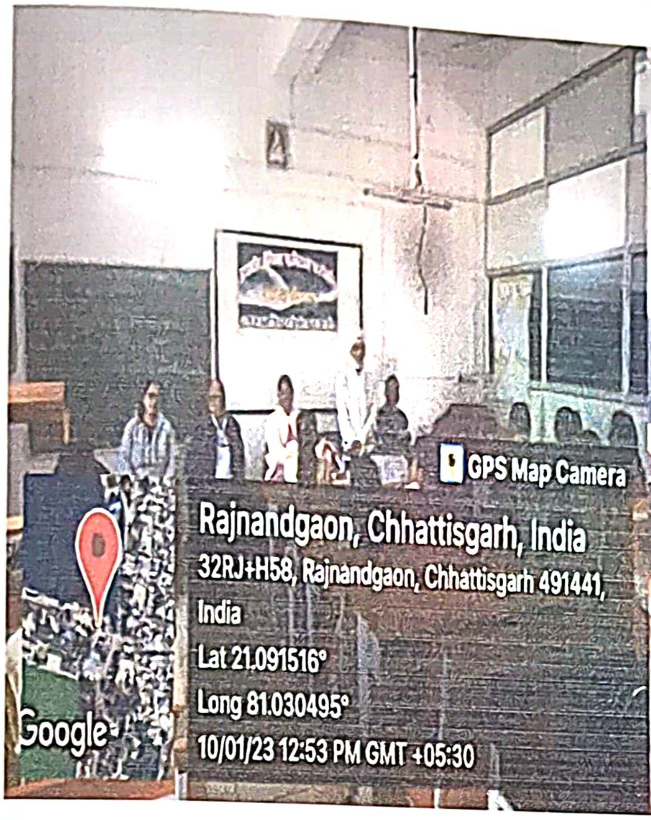

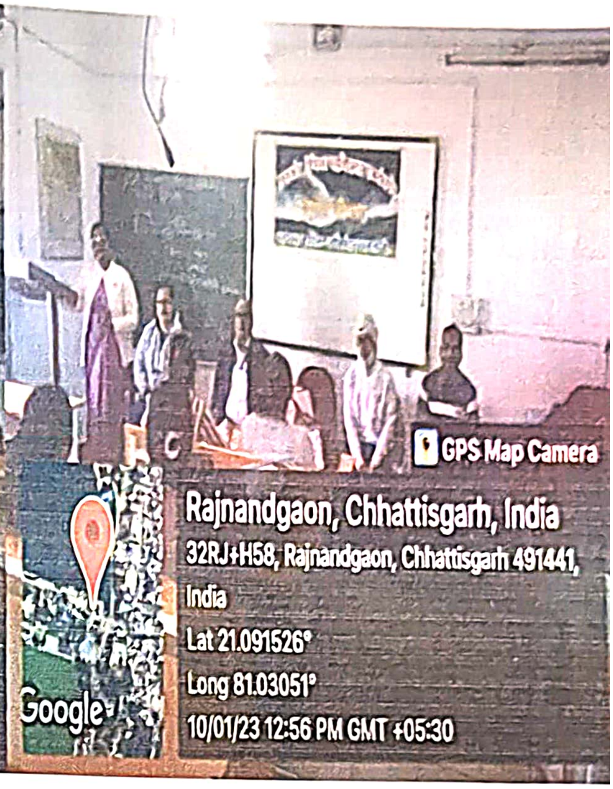

अतिथि व्याख्यान

भूगोल में कैरियर की संभवानाएं एवं तैयारी

शा. दिग्विजय स्वसाशी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजनांदगांव के भूगोल विभाग में दिनांक 11.02.2023 को डॉ. कुबेर सिं गुरुपंच, प्राध्यापक, भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग के द्वारा 'भूगोल में कैरियर की संभवानाएं एवं तैयारी' विषय पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसमे भूगोल विभाग के विभागध्यक्ष डॉ. के एन. प्रसाद, डॉ. एस. जेनामणी, डॉ. प्रतिमा विश्वकर्मा, श्री आशीष मांझी एवं एम. ए. द्वितीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर के विद्यार्थीयो की उपस्थिति गरिमामय रही। व्यख्यान में बताया गया भूगोल व्यापक विषय है। इस लिए इसमें कैरियर की संभावनाये भी काफी अधिक है। भूगोल की भौतिक, मानव एवं पर्यावरण जैसी अलग अलग शाखाए है। भौतिक भूगोल के तहत पृथ्वी और उसके वातावरण की भौतिक वातावरण की विशेषताओं का अध्यन किया जाता हैं। जबकी मानव भूगोल में मनुष्य की आर्थिक, राजनितिक, सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के बारे जाना जाता हैं। भूगोल मे पढ़ाई करने के बाद रोजगार के भरपूर मौके है। इस क्षेत्र में ट्रांसपोर्टेशन, एयरलाइट रूट व शिपिंग रूट प्लानिंग, कार्टोग्राफी, सेटेलाइट टेक्नोलॉजी, जनसंख्या परिषद, मौसम विभाग, आपदा प्रबंधन पर्यावरण विज्ञान, एजुकेशन, सिविल सर्विसेज आदि क्षेत्रों में जॉब पा सकते हैं अतिथि व्याख्यान में भूगोल में कैरियर की जानकारी के साथ ही विभिन्न कॉम्पटीसन् परीक्षाओ की तैयारी करने की जानकारी से विद्यार्थी बहुत लाभान्वित हुए।

अतिथि व्याख्यान

समुद्री कानून

शा. दिग्विजय स्वसाशी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजनांदगांव के भूगोल विभाग में दिनांक 23.03.2023 को डॉ. के. के. द्विवेदी, सहायक प्राध्याक, शा. कमला देवी राठी महिला महाविद्यालय राजनांदगांव के द्वारा एम. ए. द्वितीय सेमेस्टर के पेपर समुद्र विज्ञानं विषय के 'समुद्री कानून' विषय पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसमे भूगोल विभाग के विभागध्यक्ष डॉ. के एन. प्रसाद, डॉ. एस. जेनामणी, डॉ. प्रतिमा विश्वकर्मा, श्री आशीष मांझी एवं एम. ए. द्वितीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर के विद्यार्थीयो की उपस्थिति गरिमामय रही। व्यख्यान में समुद्र का कानून समुद्री वातावरण में राज्यों के अधिकारों और कर्तव्यों को नियंत्रित करने वाले अंतरराष्ट्रीय कानून पर गहन चर्चा की गई साथ ही नौवहन अधिकार, समुद्री खनिज दावों और तटीय जल क्षेत्राधिकार जैसे मामलों से संबंधित जानिकारी से विद्यार्थी अवगत हुए।

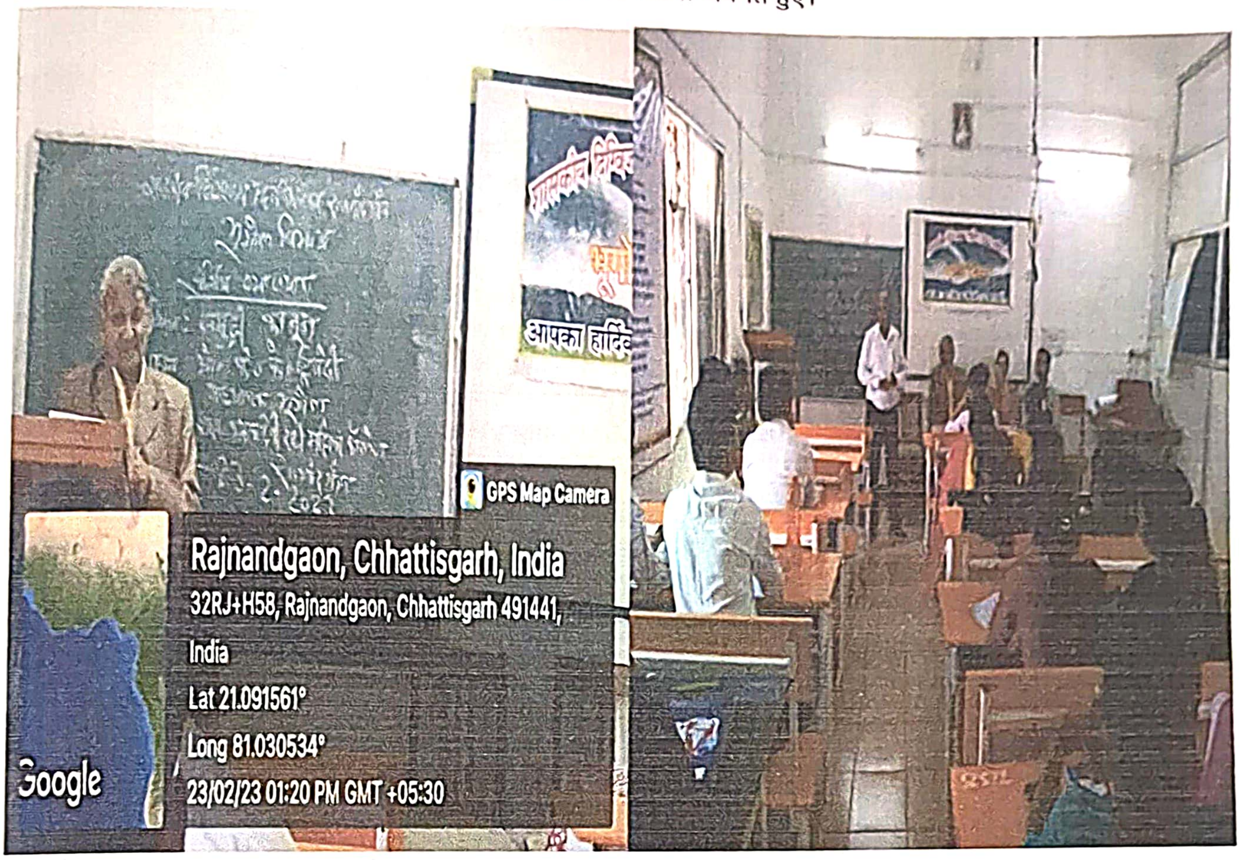

अतिथि व्याख्यान

डम्पी लेवल सर्वे

शा. दिग्विजय स्वसाशी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजनांदगांव के भूगोल विभाग में दिनांक 23.03.2023 को डॉ. जय सिंह साहू, सहायक प्राध्याक, शा. कमला देवी राठी महिला महाविद्यालय राजनांदगांव के द्वारा एम. ए. द्वितीय सेमेस्टर के पेपर प्रायोगिक विषय के 'डम्पी लेवल सर्वे' विषय पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसमे भूगोल विभाग के विभागध्यक्ष डॉ. के एन. प्रसाद, डॉ. एस. जेनामणी, डॉ. प्रतिमा विश्वकर्मा, श्री आशीष मांझी एवं एम. ए. द्वितीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर के विद्यार्थीयो की उपस्थिति गरिमामय रही। व्यख्यान में डम्पी लेवल सर्वे की विधि, लाभ, उपयोगिता पर विस्तार पूर्वक चर्चा की गई इसके साथ ही विद्यार्थीयो को डम्पी लेवल उपकरण सर्वेक्षण और समतलन कार्यो के लिए किया जाता है यह भी बताया गया। इसमें एक टेलिस्कोप ट्यूब होती है, जो दो कॉलर और एडजस्टिंग स्क्रू के बीच मजबूती से पकड़ी जाती है। पूरे उपकरण का मंचन ऊर्ध्वाधर धुरी द्वारा किया जाता है। डम्पी लेवल पर रखे टेलिस्कोप को हॉरिजॉन्टल प्लेन के बीच घुमाया जा सकता है। भूमि पर सर्वेक्षण बिंदुओं के सापेक्ष उन्नयन को डम्पी स्तर के माध्यम से निर्धारित किया जा सकता है। डंपी लेवल का आविष्कार (Willian Gravat,) विलियन ग्रेवेट ने 1832 में किया था। इस अतिथि व्याख्यान के द्वारा विद्यार्थियों को डम्पी लेवल सर्वे की जानिकारी से सम्बंधित बहुमूल्य जानकारी प्राप्त हुई।

7. Geography Educational Tour- Vishakapatnam (Andhra Pradesh)- (18/03/2023-23/03/2023)

शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव (छ.ग.)

भूगोल विभाग

शैक्षणिक भौगोलिक भ्रमण : विशाखापत्तनम (आंध्रप्रदेश)

2022-23

प्रस्तावना

शिक्षा के क्षेत्र में अपना विशेष महत्व है। शैक्षणिक भ्रमण से हमरा प्रकृति की सुंदरता से साक्षात्कार होता हैं। मानव सुंदर कलाकृतियों से परिचित होते हैं साथ ही साथ कुदरत के कुछ रहस्य से भी परिचित होते हैं जिसमें हमारे ज्ञान में वृद्धि होती है। शैक्षणिक भ्रमण में हम परोक्ष नहीं बल्कि प्रत्यक्ष रूप से देखते हैं जिसमें ज्ञान स्थाई होता हैं साथ ही रसअनुभूति की प्राप्ति होती है और नयन सुख की प्राप्ति होती है। यह मनोरंजन के माध्यम से सीखना शिक्षा का सबसे अच्छा माध्यम है।

शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजनांदगांव के भूगोल विभाग में शैक्षिक भौगोलिक भ्रामण की अनुमति डॉ. के. एल. टांडेकर प्राचार्य महोदय के द्वारा प्रदान करने के उपरांत शैक्षणिक भौगोलिक भ्रमण की योजना विभागाध्यक्ष डॉ. के. एन. प्रसाद के मार्गदर्शन में बनाई गई। शैक्षिक भौगोलिक भ्रामण में भूगोल विभाग की - डॉ. प्रतिमा विश्वकर्मा एवं एम. ए. चतुर्थ सेमेस्टर के विद्यार्थी : छात्राये - जागृती, माला, चैती, मनीषा, दुर्गा, नोहेस्वरी, दिव्या, लुकेश्वरी, यशोदा छात्र - गर्जेंद्र, मनीष, मनमोहन, कोकचंद, भुनेश्वर, खेमचंद, संजय, नंदलाल सहायक : श्री मोहित टंडन, श्री राहुल देवांगन एवं डॉ. आशीष कुमार मांझी शामिल रहे।

महाविद्यालय के भूगोल विभाग से छात्र-छात्राएं 4 दिन के लिए दिनांक 18.03.2023 से 22.03.2023 तक शैक्षणिक भौगोलिक भ्रमण हेतु विशाखापत्तनम के लिए गए जहां हमें समुद्र विज्ञानं, जलवायु विज्ञानं, जैव भूगोल, पर्यावरण भूगोल के साथ ही मानव पर्यवारण सम्बन्ध को प्रायोगिक रूप से समझने का मौका मिला। समुद्र के ज्वार-भाटा, सागरीय लहरों, सागरीय लहरों के अपरदन से निर्मित स्थलाकृतियों, महासागरीय मग्न तट, मनुष्य की शारीरिक बनावट जैसे- रंग एवं मनुष्य के सांस्कृतिक वातावरण जैसे - वस्त्र, भोजन, व्यवसाय आदी पर जलवायु एवं भौतिक वातारण प्रभाव, समुद्र जीवो एवं समुद्री परिस्थितिक तंत्र का अध्ययन, बोरा क्रास्ट गुफाएं, भारत के पश्चिमी तट की अराकु वैली, प्राचीन भारतीय शिल्पकला को जीवंत करता सीमांचल मंदिर, कैलाशगिरी, ऋषिकोंडाबीच, रामकृष्ण बीच, कालीमातामंदिर, फिशिंग हरवर, विशाखापत्तनम बंदरगाह, विशाखापत्तनम शहर, कॉफी गार्डन, एवं रामानायडू फिल्मसिटी में भारत के बहुत बड़े फ़िल्म उद्योग के बारे में प्रत्यक्ष रूप से जानकारी मिली।

शैक्षिक भौगोलिक भ्रमण का उद्देश्य

प्रस्तुत शैक्षणिक भौगोलिक भृमण के उद्देश्य -

(1) तटीय भू-आकृतियों का अध्ययन करना।

(2) विशाखापत्तनम के तटीय क्षेत्रों में जलवायु परिवर्तन और समुद्र के स्तर में वृद्धि के प्रभाव का अध्ययन करना।

(3) विशेष रूप से विशाखापत्तनम की पारंपरिक संस्कृतियों और जीवन शैली को जानने और समझने के लिए प्राचीन मंदिर जो स्थानीय वास्तुकला से निर्मित किये गए हैं उनका अवलोकन करना।

(4) समुद्री जीवों का अध्ययन करना।

(5) समुद्री धाराओं, ज्वार और समुद्री लहरों का अध्ययन करना।

(6) मनुष्य और महासागर की परस्पर अंतःक्रिया का अध्ययन करना।

(7) क्रस्ट लैंडफॉर्म का अध्ययनकरना।

(8) छात्रों में नेतृत्व क्षमता का विकाश करना।

(9) आपसी सामंजस्य एवं घर से बहार अनुशासित रहना सीखना।

(10) समय का प्रबंधन करना।

पर्यटक स्थलों की सूची

1) आर.के. बीच
2) आईएनएस पनडुब्बी
3) कालीमाता मंदिर
4) अरकूघाटी
5) बोरा क्रास्ट गुफाएं
6) कॉफी गार्डन
7) फिशिंग हरबार
8) विशाखापत्तनम बंदरगाह,
9) विशाखापत्तनम शहर
10) सीमांचल मंदिर
11) रामानायडू फिल्मसिटी
12) कैलाशगिरी,
13) ऋषिकोंडाबीच

शैक्षिक भौगोलिक भ्रमण का पहला दिन (18.03.2023) - विशाखापत्तनम के लिए ट्रेन यात्रा

विशाखापत्तनम की हमारी यात्रा राजनांदगांव स्टेशन से शुरू होती है हम 18.03.2023 को दोपहर के लगभग 1.00 बजे राजनांदगाव रेल्वे स्टेशन पहुचे राजनांदगाव से दुर्ग तक हम आजादहिन्द सुपरफास्ट ट्रेन के शयनयान कोच में प्रतीक्षा टिकट से गए। स्लीपर ट्रेन नंबर (18529) दुर्ग विशाखापत्तनम एक्सप्रेस पर छात्रों के लिए रियायती दरों पर द्वितीय क्लास शयनयान के टिकट प्राप्त किए गए थे। 22 घंटे की लंबी यात्रा बहुत उत्साह के साथ शुरू हुई। इस यात्रा में भारत के तीन राज्यो छत्तसीगढ़, उड़ीसा एवं आंध्र प्रदेश की हुई। यात्रा के दौरान दक्षिणी भारत में प्रवेश करने के उपरांत दक्षिण की आर्द्र जलवायु महसूस की गई। जब हम विशाखापत्तनम पहुँचे ठंडी और नम हवा का अनुभव हुआ। अधिकांश विद्यार्थियों ने समुद्र को प्रत्यछ रूप से नहीं देखा था इसलिए समुद्र को देखने के लिए बहुत उत्साहित थे।

राजनांदगांव से यात्रा की शुरुआत

शैक्षिक भौगोलिक भ्रमण का दूसरा दिन (19.03.2023) - समुद्र तट, आईएनएस पनडुब्बी और कालीमाता मंदिर की यात्रा

समुद्र तट के बिना एक तटीय शहर लगभग हवा के बिना सांस लेने जैसा है, यह असंभव है। राम कृष्ण बीच विशाखापत्तनम के सबसे खूबसूरत बीचों में से एक है। यात्रा करने के लिए पहली जगह रामकृष्ण बीच विशाखापत्तनम में लोक प्रिय समुद्र तट में से एक है। विशाखापत्तनम रेलवे स्टेशन से सिर्फ 4 किमी दूर स्थित, राम कृष्ण बीच या आरके बीच विशाखापत्तनम में सबसे लंबा होने के लिए प्रसिद्ध है। इसके अलावा, आंध्र विश्वविद्यालय नियमित रूप से समुद्री कछुओं को उनके प्रजनन के मौसम में बचाने के लिए शोध कर रहा है। जिसे आप भी देख सकते हैं। समुद्र तट के अलावा, इसके विपरीत स्थित विभिन्न संग्रहालयों, मंदिरों, मछलीघर और निश्चित रूप से श्री रामकृष्ण मिशन आश्रम मे भी हम गए।

रामकृष्ण बीच

आईएनएस कुर्सुरा (एस20) :

विशाखापत्तनम में घूमने के लिए सबसे अच्छी जगहों में से एक, पनडुब्बी संग्रहालय रामकृष्ण समुद्र तट पर स्थित है। भारतीय नोसेना की कल्वरी-स्तरीय डीजल-इलेक्ट्रिक पनडुब्बी है। वह भारत की पाँचवीं पनडुब्बी थी। कुर्सुरा को 18 दिसंबर 1969 को भारतीय नौसेना में जोड़ा गया था और 31 साल की सेवा के बाद 27 फरवरी 2001 को इसे सेवामुक्त किया गया। इसने 1971 में भारत-पाकिस्तानी युद्ध में भाग लिया, जहां इसने गश्त देने वाले मिशनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सेवामुक्ति के बाद, इसे विशाखापत्तनम में आरके बीच पर सार्वजनिक पहुँच के लिए एक संग्रहालय के रूप में संरक्षित किया गया है। ये चुनिंदा पनडुब्बी संग्रहालयों में से एक है जिसकी मौलिकता बनी रही है और इसे विशाखापत्तनम का अवश्य देखे जाने वाला पर्यटक स्थल माना जाता है।

कुर्सुरा की लंबाई 91.3 मीटर (300 फीट) है। यह अधिकतम 985 फीट (300 मीटर) की गहराई तक जा सकती है। इसमें 75 लोग आ सकते हैं, जिसमें 8 अधिकारी और 67 नाविक शामिल हैं।पनडुब्बी में तीन शाफ्ट हैं, जिनमें से प्रत्येक में छह ब्लेड वाला प्रोपेलर है। यह तीन कोलोम्ना 2D42M डीजल इंजन द्वारा संचालित है, प्रत्येक में 2,000 हॉर्सपॉवर (1,500 kW) है। इसके पास तीन इलेक्ट्रिक मोटर भी हैं, जिनमें से दो 1,350 हॉर्सपावर (1,010 kW) और एक 2,700 हॉर्सपावर (2,000 kW) के साथ हैं। यह सतह पर 16 नॉट (30 किमी / घंटा) की अधिकतम गति प्राप्त कर सकती है।

कुर्सुरा को 18 दिसंबर 1969 को रीगा, सोवियत संघ में निर्मित किया गया था। इसने 20 फरवरी 1970 को भारत में अपनी पहली यात्रा शुरू की। 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान, कुर्सुरा अरब सागर में संचालित हुआ। युद्ध शुरू होने से पहले उसे दो निर्दिष्ट क्षेत्रों में गश्त की ड्यूटी दी गई थी। लेकिन उसे दो प्रतिबंधों के तहत काम करने का आदेश दिया गया था: वह सीमांकित शिपिंग गलियारों को पार नहीं करेगी और वह सकारात्मक पहचान के बाद ही लक्ष्य पर हमला कर सकती थी। उसकी गश्त का उद्देश्य किसी भी पाकिस्तानी नौसैनिक युद्धपोतों को डुबोना था, विशेष रूप से आदेश दिए जाने पर व्यापारी नोवहन को रोकना और सामान्य गश्त करना और निगरानी का संचालन करना है।

आईएनएस कुरसुरा एक रूसी निर्मित पनडुब्बी थी, जिसे 2001 में सेवामुक्त कर दिया गया और 2002 में एक संग्रहालय में बदल दिया गया। युद्ध के दौरान अंदर रहने का चुनौतीपूर्ण काम। तस्वीरों, कलाकृतियों और लिखित लिपियों की मदद से आप पनडुब्बी के आंतरिक कामकाज के बारे में आसानी से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

पनडुब्बी संग्रहालय को देखने के बाद हमें भारत के नौ सैनिको के साहस एवं बलिदान पर बहुत गर्व हुआ एवं उस समय इंजिनियरो के द्वारा डिजाइन की गई इस पनडुब्बी को देख कर आगे बढ़ने हेतु प्रेरणा भी मिली।

आईएनएस कुर्सुरा (एस20)

कालीमाता मंदिर :

कालीमाता मंदिर या विशाखापत्तनम का काली मंदिर एक लोकप्रिय तीर्थस्थल है। इसके पीछे सबसे महत्वपूर्ण कारण इसे विरासत में मिला समृद्ध इतिहास है। मंदिर की नींव, मूल रूप से, बांस से बनी एक कंकाल संरचना थी। इस मंदिर का निर्माण, वहां वर्ष 1984 में शुरू हुआ। काली मंदिर विशाखापत्तनम, आंध्र प्रदेश के राम कृष्ण समुद्र तट के तट पर स्थित है। मंदिर सप्ताह के हर दिन सुबह 6:00 बजे से दोपहर तक और फिर शाम को 4:00 बजे से रात 8:00 बजे तक खुला रहता है।

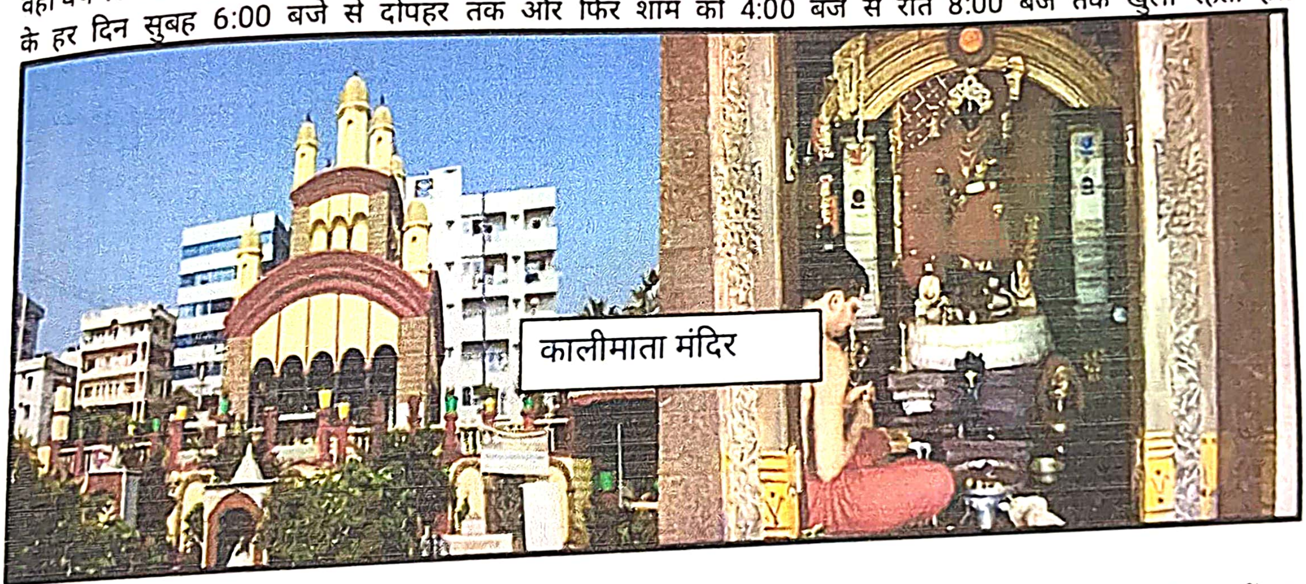

कालीमाता मंदिर

जैसे ही आप इसके परिसर में पैर रखते हैं, ऊंचे खंभे, गुंबद और मीनारें इस मंदिर में आपका स्वागत करती हैं। इसमें एक कार्यालय, पुजारियों के लिए रहने का स्थान और एक मंदिर की रसोई है। जबकि मंदिर हिंदू देवी काली के अभयारण्य को समर्पित है, इसके निकट एक और मंदिर है। यह भगवान शिव को समर्पित है। शिवलिंग 'रसलिंग' से बना है, जिसका वजन लगभग 10 किलोग्राम है जो पूरे पत्थर से बना है। काली मंदिर मुख्य रूप से अपनी आधुनिक, इंजीनियरिंग प्रतिभा के कारण अलग खड़ा है जो लुभावनी रूप से सुंदर है। यहां जो कर सकते हैं, उनमें शामिल हैं - 1. दर्शन या प्रार्थना काली मंदिर में कर सकते हैं 2. मंदिर किसी धर्मस्थल से कम नहीं है बैठने और मंदिर द्वारा प्रदान की जाने वाली शांति का आनंद लेने के लिए एक अद्भुत जगह है 3. फोटोग्राफी, संस्कृति, भावनाओं, लोगों को उनके वास्तविक रूप में चित्रित करते हुए, मंदिर महान फोटोग्राफिक अवसर प्रदान करते हैं।

शैक्षिक भौगोलिक भ्रमण का तीसरा दिन (20.03.2023) - अरकू घाटी, कॉफीगार्डन, बोरा गुफाएं की यात्रा

अरकु घाटी :

अरकू घाटी भारत में आंध्र प्रदेश राज्य के विशाखपट्नम जिले में एक पर्वतीय स्थान है। यह घाटी पूर्वी घाट पर स्थित है और कई जनजातियों का निवास स्थान रहा है। अरकू घाटी दक्षिण भारत में सबसे कम प्रदूषित क्षेत्रों में से एक है तथा वाणिज्यिक रूप से कम उपयोग किया हुआ पर्यटक स्थल है। इसकी औसत ऊँचाई 911 मीटर है। यह विशाखपट्णम से 120 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है तथा उड़ीसा राज्य की सीमा के समीप है। अनंतगिरि और सुंकारीमेट्टा आरक्षित वनक्षेत्र अरकू घाटी के अभिन्न अंग हैं। यह घाटी गालिकोंड, रक्तकोंडा, सुंकारीमेट्टा तथा चितमोगोंडी जैसे पहाड़ों से चारो तरफ से घिरी हुई है। गालिकोंडा पर्वत की ऊँचाई 1500 मी तक है, जो आंध्र प्रदेश राज्य में सबसे ऊँचा है। अरकू अपने कॉफी पौधरोपण के लिए प्रसिद्ध है। आदिवासियों द्वारा उत्पादित भारत का प्रथम जैविक कॉफी ब्रांड सन 2003 में जारी किया गया। अरकू में उत्पादित उत्तम किस्म का कार्बनिक ब्रांड कॉफी अरकू एमराल्ड की बिक्री वैश्विक स्तर पर की जाती है। अरकू जनजातिय क्षेत्र के हजारों आदिवासी कॉफी उगाने वाले मजदूर अथवा छोटे किसान हैं।विशाखापट्नम शहर से इस घाटी का संपर्क सड़क व रेल दोनों माध्यमों से है। पूर्व तट रेलवे के विशाखापट्नम संभाग के कोत्तावलसा-किरुंडुल मार्ग में अरकू और अरकू घाटी नामक दो रेलवे स्टेशन हैं। भारतीय रेल के नेटवर्क में सिमिलिगुड़ा रेलवे स्टेशन समुद्र तट से 116 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। आंध्र प्रदेश में अरकू घाटी सभी कॉफी प्रेमियों के लिए एक स्वर्ग है। कॉफी बागानों के विशाल विस्तार के साथ, अराकू घाटी अपने प्राचीन और अछूते रूप में बनी हुई है।

विभिन्न जनजातियों द्वारा बसी हुई घाटी में दक्षिण भारत के ग्रामीण इलाकों के समुदायों का भ्रमण किया गया हैं। शहर के ऊधम-हलचल से एक परिपूर्ण पलायन, यह घाटी प्राकृतिक सौंदर्य से घिरी हुई है। यह आंध्र प्रदेश का सबसे शानदार स्थान मंत्रमुग्ध कर देने वाला है। घाटी में कई पहाड़, अविरल घास के मैदान, बगीचे शामिल हैं, जो पूरे वर्ष चलने वाले सुखद मौसम को चरितार्थ करते है।

कॉफी गार्डन :

वृक्षारोपण अराकू घाटी की जनजातियों के इतिहास में गहराई से जुड़ा हुआ है। कॉफ़ी बागानों ने जनजातियों को मुख्यधारा की आबादी में शामिल होने और अपने और अपने परिवार के लिए जीविकोपार्जन करने का अवसर दिया। कॉफी के बागानों में बहुत सी जनजातीय आबादी काम करते हुए दिखाई देती हैं। आदिवासी समूहों की कड़ी मेहनत से अराकू घाटी के इन बागानों में भारत की पहली जैविक कॉफी का उत्पादन किया गया था। अराकू एमराल्ड नाम से ब्रांडेड इस ऑर्गेनिक कॉफी ने पूरी दुनिया में लोकप्रियता हासिल की है।

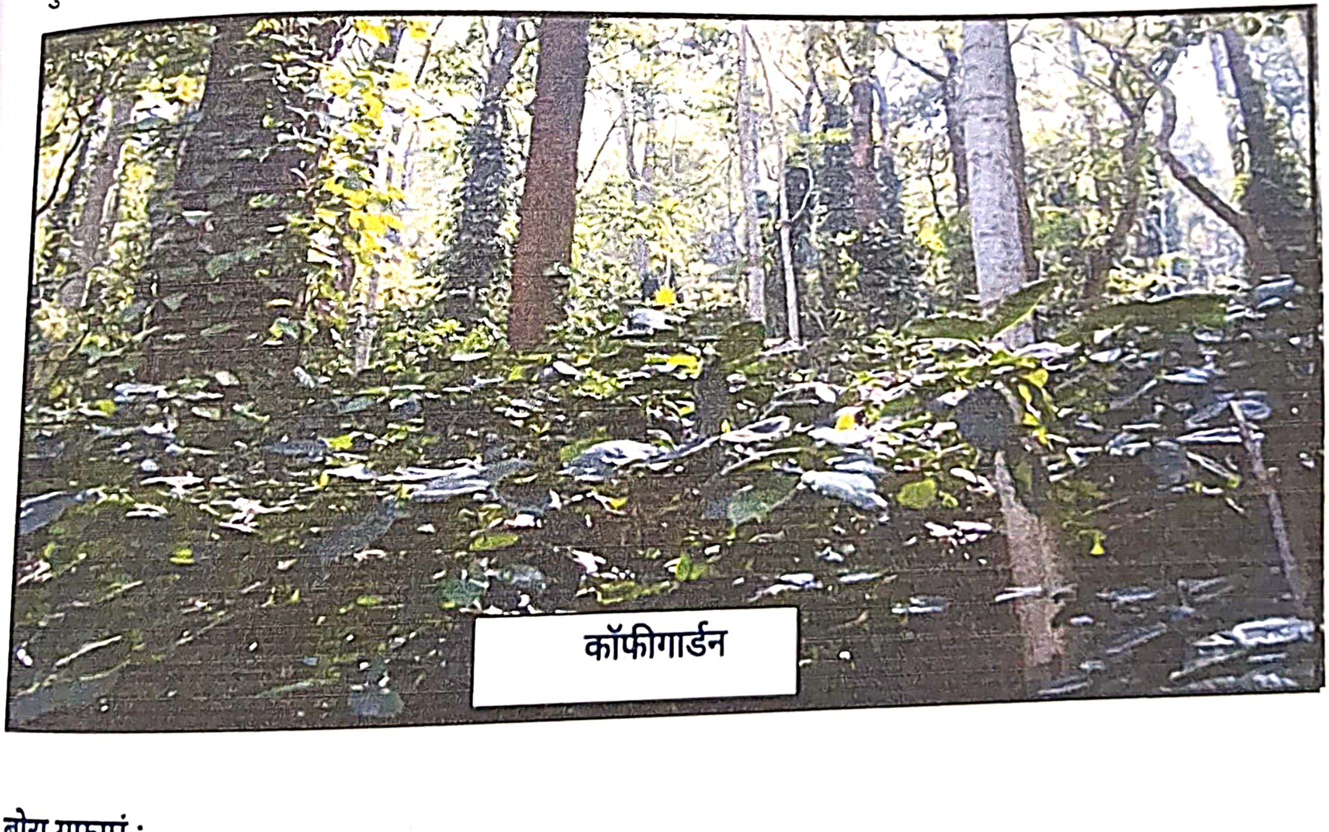

कॉफीगार्डन

बोरा गुफाएं :

प्रसिद्ध चूना पत्थर बोर्रा गुफाएं प्रकृति के अनोखे रहष्य से परिचित करती है। बोरा गुफाएं (जिन्हें बोर्रा गुहलू भी कहा जाता है) भारत के पूर्वी तट पर अराकू घाटी की अनंतगिरी पहाड़ियों में स्थित हैं। पहाड़ी श्रृंखलाओं की ऊंचाई 800 से 1,300 मीटर तक (2,600 से 4,300 फीट) तक भिन्न दिखाई देती है। देश की सबसे बड़ी गुफाओं में से एक, लगभग 705 मीटर (2,313

फीट) की ऊंचाई पर, विशिष्ट रूप से आकार और अनियमित आकार के स्टेलेक्टाइट्स और स्टेलेग्माइट्स में विभिन्न प्रकार के स्पेलोथेम्स प्रदर्शित होते हैं। गुफाएं मूल रूप से 80 मीटर (260 फीट) की गहराई तक फैली कार्स्टिक चूना पत्थर की संरचनाएं हैं, और इन्हें भारत की सबसे गहरी गुफाएं माना जाता है। गुफाओं का मूल नाम बोर्रा गुहलू है। जहां तेलुगु भाषा में बोर्रा का मतलब पेट होता है और तेलुगु भाषा में गुहलू का मतलब गुफाएं होता है। गुफाएँ अनंतगिरि पहाड़ी श्रृंखला की अराकू घाटी में स्थित हैं और गोस्थानी नदी से निकलती हैं। प्रवेश पर, गुफा क्षैतिज रूप से 100 मीटर (330 फीट) और लंबवत रूप से 75 मीटर (246 फीट) है। गुफाओं में स्टैलेग्माइट और स्टैलेक्टाइट संरचनाएँ पाई जाती हैं। गुफाएं आंध्र प्रदेश में अल्लुरी सीताराम राजू जिले की अराकू घाटी की अनंतगिरी पहाड़ियों की श्रृंखला में स्थित हैं। गुफाएँ ओडिशा के भुवनेश्वर से 448 किलोमीटर (278 मील) और हैदराबाद से 656 किलोमीटर (408 मील), की दूरी पर हैं।

गुफा निर्माण में सूक्ष्म जीवों के प्रभाव और लोह खनिज अवक्षेपण पर उनकी भूमिका अध्ययन किया गया है। गुफाओं में पाए जाने वाले जीव में मुख्य रूप से चमगादड़ हैं, साथ ही साथ गोल्डन गेको की एक प्रजाति जो बड़ी गुफाओं, पुरानी इमारतों, कालकोठरी और पुराने किलों के अंधेरे क्षेत्रों में बसेरा करती है। गोस्थानी नदी, जो इन गुफाओं से निकलती है और कार्स्टिक चूना.पत्थर के गठन में ठोस स्टैलेक्टाइट्स और स्टैलेग्माइट्स के बीच बहती है, संरचनाओं के विषम आकार के विकास का मुख्य कारण है। गुफाओं की छत से रिसने वाला पानी चूना पत्थर को घोलता है और बूंद-बूंद करके गुफा की छत पर स्टैलेक्टाइट्स बनाता है और फिर जमीन पर टपकता हुआ स्टैलेग्माइट्स बनाता है। ये निक्षेप गुफाओं के अंदर शिव-पार्वती, माता-बच्चे, ऋषि की दाढ़ी, मानव मस्तिष्क, मशरूम, मगरमच्छ, मंदिर, चर्च आदि जैसे दिलचस्प रूपों और संरचनाओं में विकसित हुए हैं। इन आकृतियों ने पर्यटकों की कल्पना को झकझोर दिया है, जबकि कुछ लोगो के द्वारा इनके निर्माण के सम्बन्ध में धार्मिक व्याख्या की गई है।

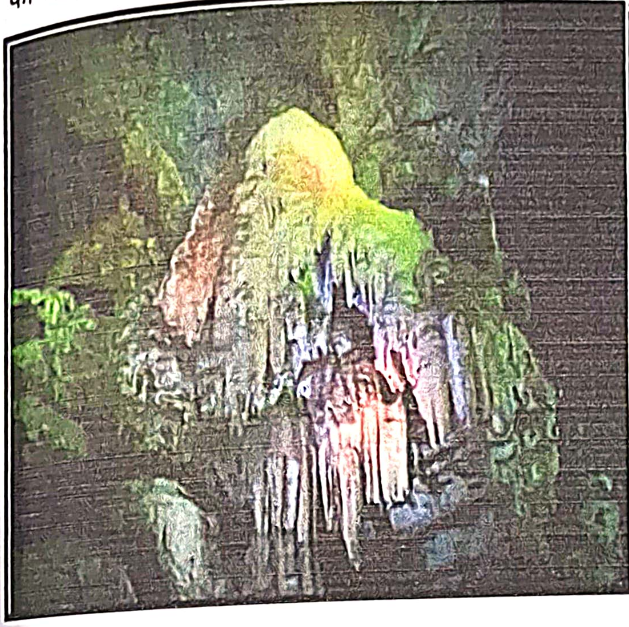

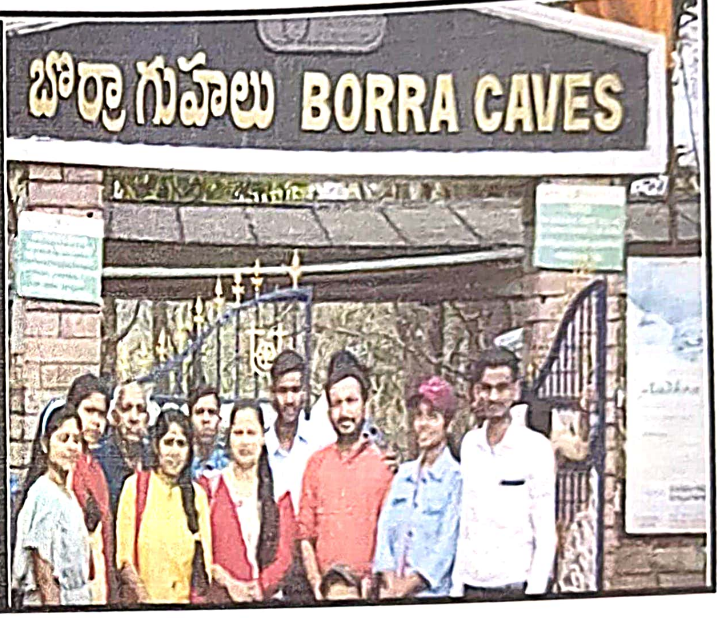

शैक्षिक भौगोलिक भ्रमण का चौथा दिन (21.03.2023) - फिशिंग हार्बर, विशाखापत्तनम पोर्ट, विशाखापट्नम सिटी की यात्रा

फिशिंग हार्बर :

विशाखापत्तनम में घूमने के सभी स्थानों में से, फिशिंग हार्बर एक ऐसी जगह है जो हर समय भीड़ भाड़ से भरी रहती है। 26 हेक्टेयर के क्षेत्र में फैला, इसे वर्ष 1976 में खोला गया था और यह विशाखापत्तनम पोर्ट ट्रस्ट के नियंत्रण में है। विशाखापत्तनम में फिशिंग हार्बर जाने के लिए कोई प्रवेश शुल्क नहीं है। इसके खुलने और बंद होने के समय की बात करें तो यह दिन के किसी भी समय सुबह 5:00 बजे से शाम 6:00 बजे के बीच अपने आगंतुकों का स्वागत करता है।

शहर के पूर्वी तट पर स्थित, फिशिंग हार्बर को भारत में मछली पकड़ने के सबसे बड़े बंदरगाहों में से एक माना जाता है, जो आपको बंगाल की खाड़ी के मंत्रमुग्ध कर देने वाले दृश्य को देखने का मौका देता है। यहां दूर से ही समुद्र, जमीन और पहाड़ियों के मिश्रण का आनंद भी ले सकते हैं।

विशाखापत्तनम पोर्ट :

विशाखापत्तनम पोर्ट भारत के 13 प्रमुख बंदरगाहों में से एक है और आंध्र प्रदेश का एक मात्र प्रमुख बंदरगाह है। कार्गो की मात्रा के हिसाब से यह भारत का तीसरा सबसे बड़ा राज्य के स्वामित्व वाला बंदरगाह है और पूर्वी तट पर सबसे बड़ा है। यह बंगाल की खाड़ी में चेन्नई और कोलकाता बंदरगाहों के बीच में स्थित है। 19वीं शताब्दी में मध्य प्रांतों तक पहुँचने के लिए पूर्वी तट पर एक बंदरगाह के निर्माण की आवश्यकता अंग्रेजों द्वारा महसूस की गई थी, विशाखापत्तनम में एक बंदरगाह के निर्माण के लिए ब्रिटिश एडमिरल्टी के कर्नल एच. कार्टराइट रीड के प्रस्ताव को सरकार द्वारा केवल बाद में अनुमोदित किया गया था। 0मध्य प्रांत से मैंगनीज अयस्क के निर्यात की सुविधा के लिए 1927 और 1933 के बीच बंगाल नागपुर रेलवे द्वारा इनर हार्बर का निर्माण किया गया था। ₹378 लाख की लागत से बने इस बंदरगाह का उद्घाटन लॉर्ड विलिंगडन ने 19 दिसंबर 1933 को किया था।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, बंदरगाह का सैन्य महत्व बढ़ गया। भारत की स्वतंत्रता के बाद, बंदरगाह ने विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं के तहत विकास देखा। समय के साथ, बंदरगाह 3 बर्थ वाले एक से बढ़कर 1.3 लाख टन प्रति वर्ष से 24 बर्थ और 65 मिलियन टन के वार्षिक यातायात के साथ हो गया है। पोर्ट को मेजर पोर्ट ट्रस्ट एक्ट, 1963 के तहत 1964 में एक प्रमुख पोर्ट के रूप में अधिसूचित किया गया था। एक्ट के तहत, विशाखापत्तनम पोर्ट ट्रस्ट पोर्ट को चलाने का प्रभारी है। विशाखापत्तनम बंदरगाह के तीन बंदरगाह हैं - बाहरी बंदरगाह, भीतरी बंदरगाह और मछली पकड़ने का बंदरगाह। बाहरी बंदरगाह में 6 बर्थ हैं जो 17 मीटर तक के मसौदे वाले जहाजों को संभालने में सक्षम हैं, जबकि छोटे आंतरिक बंदरगाह में 18 बर्थ हैं जो पैनामैक्स संगत हैं। विज़ाग बंदरगाह के भीतरी बंदरगाह में दो बर्थ हैं; बर्थ EQ-8 पूरी तरह यंत्रीकृत है और बर्थ EQ-9 बर्थ नहीं है। प्रवेश चैनल के उत्तर में डॉल्फिन्स नोज हिल पूर्वी तट पर आने वाले चक्रवातों से बंदरगाह की रक्षा करती है। बंदरगाह एक खाड़ी के क्षेत्र में स्थित है जिसके माध्यम से तटीय नदी नरवा गेड्डा समुद्र में मिलती है। लौह अयस्क, मैंगनीज अयस्क, इस्पात उत्पाद, सामान्य कार्गो, कोयला और कच्चा तेल इस बंदरगाह पर परिवहन की जाने वाली मुख्य वस्तुएं हैं। वर्ष 2022 तक नेपाल के साथ 70% से अधिक विदेशी व्यापार इसी बंदरगाह से हुआ है।

विशाखापट्नम सिटी :

विशाखापत्तनम आंध्र प्रदेश में स्थित सबसे महत्वपूर्ण शहरों में से एक है जिसे भारत के शून्य अप्रधन शहर के रूप में भी जाना जाता है। हैदराबाद के बाद यह इस राज्य का दूसरा सबसे बड़ा शहर है जो आजादी से पहले ब्रिटिश काल में भी एक महत्वपूर्ण शहर रहा था। वर्तमान समय में, अपनी विशेष भौगोलिक स्थिति के कारण यह शहर पुरे भारत में अपनी अलग पहचान रखता है। शहर की मुख्य विशेषता यह है कि इसकी पश्चिमी सीमा पर यह पहाड़ियों से घिरा हुआ है और पूर्वी तरफ बंगाल की खाड़ी है। एक प्रमुख बंदरगाह शहर होने के साथ-साथ उष्णकटिबंधीय समुद्र तटों के साथ इतनी सुंदरता होने के कारण, हर साल लोग बहुत बड़ी संख्या में यहां आते हैं इसके साथ ही विशाखापत्तनम में खरीदारी करना एक अनुभव के लायक है। यह न केवल एक कॉर्पोरेट शहर के रूप में परिपूर्ण है बल्कि एक उत्कृष्ट पर्यटक आकर्षण भी है। शाम को, हम विशाखापत्तनम में खरीदारी के लिए डाबा गार्डन, सिटी सेंटर और नेहरू बाजार स्थानों पर गए।

शैक्षिक भौगोलिक भ्रमण का पांचवा दिन (22.03.2023) - सिमाचलम मंदिर, कैलासगिरि, रुशिकोंडा बीच की यात्रा

सिंहाचलम मंदिर :

सिमाचलम मंदिर विशाखापत्तनम के उत्तर में दस मील की दूरी पर समुद्र तल से 800 मीटर (2,600 फीट) ऊपर सिंहाचलम पहाड़ी श्रृंखला पर स्थित है। पहाड़ी श्रृंखला पूर्वी घाट का एक हिस्सा है और इसे कैलाश नाम दिया गया है। यह एक एम्फीथिएटर जैसी संरचना में पहाड़ी के उत्तरी भाग की चोटी पर स्थित है। मंदिर की समुद्र तल से ऊंचाई लगभग 1,500 मीटर (4,900 फीट) है। पहाड़ी के उत्तर पश्चिमी ढलान के साथ एक प्राकृतिक घाटी चलती हुई दिखाई देती है, जो इसकी लगभग आधी ऊंचाई को कवर करती है। छतों में कटी हुई पहाड़ी श्रृंखला का उपयोग बाद में अनानास, कटहल और केले के बड़े वृक्षारोपण के लिए किया गया। कालान्तर में मंदिर के चारों ओर एक छोटा सा गाँव विकसित हो गया।

'सिंहाचल' शब्द का अर्थ है सिंह का पर्वत। यह पर्वत भगवान विष्णु के चौथे अवतार प्रभु नृसिंह का निवास स्थान माना जाता है। माना जाता है कि इस स्थान पर भगवान नृसिंह अपने भक्त प्रहलाद की रक्षा के लिए अवतरित हुए थे। स्थल पुराण के अनुसार भक्त प्रहलाद ने ही इस स्थान पर नृसिंह भगवान का पहला मंदिर बनवाया था। भक्त प्रहलाद ने यह मंदिर नृसिंह भगवान द्वारा उनके पिता के संहार के पश्चात बनवाया था। परन्तु कृतयुग के पश्चात इस मंदिर का रखरखाव नहीं हो सका और यह मंदिर गर्त में समा गया। कालान्तर में लुनार वंश के पुरुरवा ने एक बार फिर इस मंदिर की खोज की और इसका पुनर्निर्माण करवाया।

कैलासगिरि :

कैलासगिरि भारत के आंध्र प्रदेश में विशाखापत्तनम शहर में एक पहाड़ी पर स्थित पार्क है। यह पार्क विशाखापत्तनम मेट्रोपॉलिटन रीजन डेवलपमेंट अथॉरिटी (वीएमआरडीए) द्वारा विकसित किया गया था और इसमें 380 एकड़ (150 हेक्टेयर) भूमि शामिल है जो वनस्पतियों और उष्णकटिबंधीय पेड़ों से भरी है। 173 मीटर (568 फीट) की दूरी पर स्थित इस पहाड़ी से विशाखापत्तनम शहर दिखता है।

आंध्र प्रदेश सरकार ने 2003 में कैलाशगिरी को "सर्वश्रेष्ठ पर्यटक स्थल" के रूप में सम्मानित किया था। औसतन हर साल लगभग तीन लाख भारतीय और विदेशी पर्यटक पार्क में आते हैं। पर्यावरण की सुरक्षा के लिए, वीएमआरडीए ने पहाड़ी को प्लास्टिक मुक्त क्षेत्र घोषित किया है। एक केबल कार पहाड़ी की चोटी से जुड़ती है जो आंध्र प्रदेश में अपनी तरह की पहली है।

रुशिकोंडा बीच :

रुशिकोंडा बीच विशाखापत्तनम में सबसे सुंदर और लोक प्रिय समुद्र तटों में से एक है, जो शहर को 'ईस्ट कोस्ट का गहना' उपनाम देने में योगदान देता है। जब वाईज़ाग में दर्शनीय स्थलों की बात आती है, तो आप इस जगह को नहीं छोड़ सकते।

जब आप इस समुंदर के किनारे का पता लगाने के लिए निकलते हैं, तो आप इसके पानी और टीले वाले तट से मंत्र मुग्ध हो जाएंगे। शाम को लंबी चहल कदमी के लिए आदर्श, यह सिर्फ बैठने और ठंडी लहरों को का अनुभव करने के लिए भी एक बढ़िया जगह है। यदि समुद्र के किनारे टहलना आपका विचार नहीं है, तो तैराकी, जेटस्कीइंग और सर्फिंग जैसी विभिन्न साहसिक गतिविधियाँ हैं जिन्हें आप आज़माया जा सकता हैं।

विशाखापट्नम से राजनांदगांव की वापसी :

Edit with WPS Office

विशाखापट्नम के सफल भौगोलिक भृमण के पश्चात हम दिनांक 22.03.2023 को रात्रि के लगभग 8:00 बजे विशाखापट्नम के रेल्वे स्टेशन पहुच गए। हमारी वापसी का टिकट आरक्षण विशाखापत्तनम-कोरबा लिंक एक्सप्रेस में था जिसका विशाखापट्नम से प्रस्थान का समय रात्री के 9:05 मिनट था। ट्रेन अपने निर्धारित समय पर विशाखापत्तनम रेल्वे स्टेशन से प्रस्थान की हमने ट्रेन में रात्री का भोजन किया तत्पश्चात दिन भर की थकान के बाद अपनी -अपनी सीट पर विश्राम किया।

ट्रेन अपने निर्धारित समय पर दिनांक 23.03.2023 को सुबह 7:30 बजे रायपुर रेल्वे स्टेशन पहुँच गई। रायपुर से राजनांदगांव तक का सफर हमने रायगढ़ - हजरत निजामुद्दीन गोंडवाना सुपरफास्ट ट्रैन के स्लीपर क्लास में किया। ट्रैन अपने निर्धारित समय से 3 घंटे लेट थी। हम दोपहर को लगभग 12:05 बजे राजनांदगांव रेल्वे स्टेशन वापस पहुँच गए। राजनांदगांव रेल्वे स्टेशन से सभी विद्यार्थी अपने घर निजी वाहन एवं सुविधानुसार सार्वजनिक वाहन से पहुँचे दोपहर तक दूर दराज के विद्यार्थियों भी अपने घर सकुशल पहुच चुके थे।

निष्कर्ष :

भूगोल विभाग के शिक्षक, कर्मचारियों और छात्रों द्वारा किया गया विशाखापत्तनम का शैक्षिक भौगोलिक भ्रामन अपने उद्देश्यो को पूर्ण करता हुआ सफलता रहा। यह यात्रा विद्यार्थियों में भूगोल के सैद्धान्तिक ज्ञान को प्रत्यक्ष प्रायोगिक ज्ञान के विकास की दृष्टि से सकारात्मक रही। इस यात्रा में महासागरीय ज्वार, महासागरीय धाराओं, तटीय भू -आकृति , क्रर्स्ट स्थलाकृति के बारे में व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त हुआ। साथ ही दिनांक 21.03.2023 को हिंदी पंचांग की चैत्र शुक्ल पक्ष की अमावश्या तिथि होने के कारण दीर्ध ज्वर-भाटा को भी प्रत्यक्ष देखने का अवसर प्राप्त हुआ। यात्रा के परिणाम निम्नानुसार हैं -

1) विद्यार्थी घर से बहार अनुसाशित रहना, परस्पत सहयोग करना एवं नेतृव करना सीखें।
2) छात्रों ने विशाखापत्तनम के लोगों की जीवन शैली, संस्कृति, परंपरा, खान-पान का अनुभव किया।
3) छात्रों ने विशाखापत्तनम के तटीय क्षेत्रों में जलवायु परिवर्तन और समुद्र के स्तर में वृद्धि के प्रभाव को जानने में सक्षम हुआ।
4) तटीय भू-आकृतियों, समुद्री लहरों के प्रकारों और महासागरीय धाराओं की पहचान करना और उच्च ज्वार और निम्न ज्वार के पानी के समय की गणना करना सीखा।
5) छात्रों को क्रस्ट स्थलाकृति और बोर्रा गुफाओं के निर्माण के बारे में जानकारी प्राप्त हुई।
6) समुद्र के जीव जंतु और समुद्री पारिस्थितिकी के बारे में ज्ञान प्राप्त किया।
7) समुद्री संसाधनों के महत्व को समझा।
8) समुद्री और महाद्वीपीय जलवायु में अंतर को समझा और अनुभव किया।
9) समुद्री तट के प्रदूषण के स्रोतों का पता चला।

विशाखापट्नम शहर को शून्य अपराध शहर के नाम से जाना जाता हैं जो की प्रेरणादयाक है।

8. Participation in National Seminar/ Workshop by the Faculty

Name of Faculty	Date	Seminar/Workshop and Orgnizer	Duration	Participation/ Presentation
Dr. K.N. Prasad	12 to 20 dec. 2016	Compu. training for college staff -dept of comp. sci. Govt. Digvijay College Rajanandgaon	08 Day	Participation
	20 -10-2022	Research Paper Writing and Publication Govt. Digvijay College Rajanandgaon - autonomous Cell	01 Day	Participation
	09-07-2022	CBCS/LOCF Workshop Govt. Digvijay College Rajanandgaon - autonomous Cell	01 Day	Participation
	Nov. 2022	मिक्तिबोध का साहित्य: युगबोध और प्रवृतियाँ हिंदी विभाग शास. दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगाँव	02 Day	Presentation
	15-16 Feb.2023	CG Geographers Association Govt Yoganandam CG College Raipur	02 Day	Presentation
Dr. S. Jenamani	20th Oct, 2022	Research Writing and Publication, Govt. Digvijay College Rajanandgaon	1 day	Participation
	6-8 February, 2023	**Reason Behind the Origin,** Govt. Digvijay College Rajanandgaon	3 days	Participation
	10-17 December, 2022	Compu. training for college staff -dept of comp. sci. Govt. Digvijay College Rajanandgaon	08 Day	Participation
	20 -10-2022	Research Paper Writing and Publication Govt. Digvijay College Rajanandgaon - autonomous Cell	01 Day	Participation
	09-07-2022	CBCS/LOCF Workshop Govt. Digvijay College Rajanandgaon - autonomous Cell	01 Day	Participation
Dr. Pratima Vishwakarma	20th Oct, 2022	Research Writing and Publication, Govt. Digvijay College Rajanandgaon	1 day	Participation
	12-13 November, 2022	गजानन्द माधव मुक्तिबोध की रचानाओ मे भूगोल, हिंदी विभाग शास. दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगाँव	2 days	Participation
	6-8 February, 2023	**Spatio-Temporal Analysis of Ambient Air Quality in Siltara Industrial Region, Chhattisgarh,** Govt. Digvijay College Rajanandgaon	3 days	Presentation
Dr. Ashis Kumar Majhi	6-8 February, 2023	**Spatio-Temporal Analysis of Ambient Air Quality in Siltara Industrial Region, Chhattisgarh,** Govt. Digvijay College Rajanandgaon	3 days	Presentation
	15-16 Feb.2023	Health Status and Health care Services in North Bastar Kanker District, Chhattisgarh CG Geographers Association Govt Yoganandam CG College Raipur	02 Day	Presentation

9.1 Dr. K.N. Prasad- *Swasthya Bhoogal*, Adhyayan Publishers and Distributers, New Delhi, ISBN- 978 – 93 – 91943 – 66 - 0

स्वास्थ्य भूगोल

लेखक
डॉ. कृष्ण नंदन प्रसाद

ADHYAYAN
अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स
नई दिल्ली

प्रकाशक :
अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स
4378/4बी, 105, जे.एम.डी. हाउस, मुरारी लाल स्ट्रीट
अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
फोन : 011-23263018, 9899819433
ई-मेल : adhyayanpublishers@yahoo.com

स्वास्थ्य भूगोल

© लेखक

प्रथम संस्करण 2023
ISBN ....

Printed in India

राकेश कुमार यादव द्वारा 'अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स' के लिए प्रकाशित। आदिल प्रिंटोग्राफिक्स, दिल्ली द्वारा शब्द-संयोजन तथा रिसर्च इंडिया प्रेस, नई दिल्ली से मुद्रित।

विषय सूची

अध्याय 1 स्वास्थ्य भूगोल : आधारभूत पहलू
- 1.1 परिचय
- 1.2 भूगोल की परिभाषा
- 1.3 स्वास्थ्य की परिभाषा
- 1.4 स्वास्थ्य भूगोल की परिभाषा
- 1.5 स्वास्थ्य भूगोल की विषय क्षेत्र
- 1.6 स्वास्थ्य भूगोल का उदभव एवं विकास
- 1.7 स्वास्थ्य भूगोल का उपागम
- 1.8 स्वास्थ्य भूगोल का अन्य विषयों से सम्बन्ध

अध्याय 2 स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य देखभाल की प्राचीन संकल्पनाएँ
- 2.1 परिचय
- 2.2 प्राचीन भारत में स्वास्थ्य की संकल्पना
- 2.3 ग्रीक सभ्यता में स्वास्थय की संकलपना
- 2.4 चीनी स्वास्थ्य एवं स्वास्थय देखभाल संकल्पना
- 2.5 अरब परसिया जगत में स्वास्थ्य की संकलपना

अध्याय 3 स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य देखभाल की आधुनिक संकल्पनाएँ
- 3.1 स्वास्थ्य के आयाम
- 3.2 स्वास्थ्य के नये दर्शन
- 3.3 स्वास्थ्य देखभाल

- 3.4 स्वास्थ्य देखभाल स्तर
- 3.5 स्वास्थ्य देखभाल की विशेषताएं
- 3.6 स्वास्थ्य के सूचक
- 3.7 स्वास्थ्य का अधिकार
- 3.8 वर्तमान स्वास्थ्य देखभाल की जिम्मेदारी

अध्याय 4 मानव स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारक
- 4.1 भौतिक कारक एवं स्वास्थ्य
- 4.2 मानवीय कारक

अध्याय 5 बीमारियों का वर्गीकरण

अध्याय 6 स्वास्थ्य देखभाल के वर्तमान प्रयास
- 6.1 विश्व स्वास्थय संगठन
- 6.2 यूनिसेफ
- 6.3 रेड क्रॉस सोसाइटी
- 6.4 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र
- 6.5 प्राथमिक सवास्थय केन्द्र
- 6.6 उप स्वास्थ्य केन्द्र
- 6.7 आंगनवाड़ी
- 6.8 मितानिन

अध्याय 7 भारत में स्वास्थ्य देखभाल के अन्य महत्वपूर्ण पहलुयें
- 7.1 भारत में परम्परगत स्वास्थ्य देखभाल
- 7.2 स्वतंत्र भारत में गठित स्वास्थ्य समितियाँ
- 7.3 स्वास्थ्य शिक्षा
- 7.4 भारतीय आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति से स्वास्थ देखभाल
- 7.5 स्वतंत्र भारत में स्वास्थ्य देखभाल कार्यक्रम
- 7.6 स्वास्थ्य देखभाल पर खर्च

प्राकक्थान

मानवीय श्रम उत्पादन का एक महत्वपूर्ण आधार है। यह श्रम उपयोग लायक है कि नहीं, यह श्रमिक के स्वास्थ्य पर निर्भर करता है। इसलिए कहा गया है – स्वास्थ्य ही धन है। भूगोल में इसी पर केन्द्रित सामाजिक भूगोल की एक नई शाखा – स्वास्थ्य भूगोल का उदभव एवं विकास हुआ है। आज, यह एक पूर्ण विकसित विषय के रूप में स्थापित इसका अपना पाठ्यक्रम है जो वि.वि. अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा संरचित एवं अनुमोदित है और स्वास्थ्य भूगोल का पाठ्यक्रम देश के उच्च शिक्षण संस्थानों, यथा विश्व विद्यालय एवं महाविद्यालयों के स्नातकोत्तर प्रोग्राम में पिछले कुछ वर्षों से संचालित है।

स्वास्थ्य भूगोल पर हिन्दी भाषा में पाठ्य–पुस्तक के अभाव को ध्यान में रखकर यह पुस्तक लिखी गई है। इसकी विषय–वस्तु को 7 अध्यायों में बाँटा गया है। ये है – आधारभूत पहलू, प्राचीन सभ्यताओं में स्वास्थ्य देखभाल, आधुनिक काल में स्वास्थ्य की संकल्पना, स्वास्थ्य देखभाल के वर्तमान प्रयास तथा भारत में स्वास्थ्य देखभाल के अन्य महत्वपूर्ण पहलु। सभी 7 अध्यायों को उपयुक्त उप–विभागों में बाँटा गया है।

यह पुस्तक सरल भाषा में लिखी गई है। इसमें तथ्यों का वर्णन एवं विश्लेषण में नयापन है। इससे इतर, इसमें वर्तमान पाठ्यक्रम से ज्यादा सामग्री दी गई है जिसके अध्यान में विद्यार्थियों में स्वास्थ्य के प्रति समझ में वृद्धि होगी। अतः यह पुस्तक ज्ञान में वृद्धि के साथ ही प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगी।

स्वास्थ्य भूगोल : एक पाठ्यपुस्तक
डॉ. कृष्ण नंदन प्रसाद
अध्ययन प्रकाशक एवं वितरक, नई दिल्ली

लेखक के बारे में....

जेएनयू के रत्नों में से एक, विशेष रूप से सी.एस.आर.डी., डॉ. कृष्ण नंदन प्रसाद, एक सतर्क बुद्धिजीवी और छत्तीसगढ़ राज्य के शिक्षण समुदाय में एक प्रसिद्ध उपस्थिति ने इस आकर्षक पुस्तक **स्वास्थ्य भूगोल, एक पाठ्यपुस्तक** के रूप में अग्रणी प्रयास, को हिन्दी में प्रकाशित किया है। गया शहर के पास लखनपुर गाँव में एक छोटे गरीब किसान परिवार में जन्मे, अपनी उच्च शिक्षा के लिए पास के गया के बजाय, बिहार के सबसे प्रमुख पटना कॉलेज पटना को चुना, जहाँ से उन्होंने I.A. और B.A. Honours (Geography) की डिग्री हासिल की। उन्होने आगे की उच्च शिक्षा के लिए देश के सबसे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली की प्रवेश परीक्षा पास कर एम. ए. में दाखिला लिया और यूजीसी, नई दिल्ली की नेट परीक्षा उत्तीर्ण कर इसी विश्वविद्यालय से भारत के ख्याति प्राप्त सामाजिक भूगोलवेत्ता प्रोफेसर एजाजुद्दीन अहमद के मार्गदर्शन में एम. फिल. तथा पीएच. डी. की डिग्री प्राप्त की। फेलोशिप अर्जित कर के एक शोध छात्र के रूप में उनकी अकादमिक यात्रा और तेजोमय उदय को अल्लामा इकबाल के एक दोहे के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है– ''सितारों से आगे जहां और भी है, अभी इस्क के इम्तिहान और भी हैं।''

मानवीय स्वभाव वाले एक प्रसिद्ध विद्वान के रूप में डॉ. कृष्ण नंदन प्रसाद अपने गुरू प्रोफेसर मूनिस रजा (जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के जी. पार्थसारथी के सह–संस्थापक) के दृष्टिकोण का दिल से पालन कर रहे हैं कि ''छात्रवृत्ति एवं संस्थानों की उत्कृष्टता रेगिस्तान में नरूलिस्तान के रूप में ही सीमित नही होनी चाहिए, बल्कि पूरे देश में फैली हुई हो,'' विशेष रूप से देश के ग्रामीण और दुर्गम पिछड़े क्षेत्रों में।

वर्तमान में वे शासकीय दिग्विजय पी.जी. स्वशासी महाविद्यालय राजनांदगाँव (छत्तीसगढ़), आदिवासी इलाके के मध्य में एक मुफस्सिल कस्बे (राजनांदगाँव) में अध्ययन के साथ रिसर्च स्कॉलर्स को पीएच. डी. की डिग्री दिलाने के लिए पर्यवेक्षण का कार्य भी कर रहे हैं। उन्होंने कॉलेज स्तर पर शोध को बढ़ावा देने की मंशा से स्वशासी प्रकोष्ठ द्वारा वार्षिक रूप से प्रकाशित होने वाली एक अंतः–विषय शोध पत्रिका Research Fronts के एक दशक से मुख्य संपादक भी रहे हैं। उन्होने अपनी पीएच. डी. थीसिस प्रकाशित करने के अलावा, एक संगोष्ठी की कार्यवाही और यूजीसी की दो परियोजनाओं को पुस्तक के रूप में भी प्रकाशित किया है। इसके

अतिरिक्त उन्होने निम्नलिखित शोध पत्रों में कई शोध पत्र प्रकाशित किए हैं यथा एनल्स ऑफ नागी, दिल्ली, एनल्स ऑफआरजीए, भीलवाड़ा, डेक्कन जियोग्रफर पुणे, द हिल जियोगफर्स, शिलांग, ज्योग्रफिकल क्वेस्ट, कोल्हापुर, मैन इन इंडिया, रांची और ब्लूअर्थ, संबलपुर।

उनकी पुस्तकों को पढ़ने और उसकी समीक्षा करन और लगभग सभी पत्रों को पढ़ने के बाद, मुझे मिर्जा गालिब को उद्धृत करते हुए उनके प्रकाशन की गुणवत्ता के बारे में अपनी राय यक्त करने का विश्वास है–

है और भी दुनिया में सुख–वर (कवि) बहुत अच्छे हैं
कहते हैं गालिब का है अंदाज–ए–बयान और।''

मुमताज खान
पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर (सांस्कृतिक भूगोल)
जामिया मिल्लिया इस्लामिया